Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language,
Online ISSN 2348-3083, SJ IMPACT FACTOR 2017: 5.068, www.srjis.com
PEER REVIEWED JOURNAL, OCT-NOV 2018, VOL- 6/30

सांभरियाजी की कहानियों पर डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरजी के जीवन — दर्शन का प्रभाव

मनोज सामा पाडवी

महविद्यालय तळोदा ता. तळोदा, जि. नंदुरबार , Email-padvimanoj@gmail.com

Abstract

बाबासाहेब आंबेडकर महामानव थे। इसलिए भारत सरकाने उन्हें 'भारतरत्न' की सर्वोच्च उपाधि से अलंकृत किया था। इन्होंने 'शिक्षित बनो, संघठित रहो और संघर्ष करो' का प्रेरक मूल मंत्र दिया था। इसी विचार दृष्टि की सार्थक परिणति दलित साहित्य का सृजन है, जो दलित कलम के रूप में दलित चेतना एवं दलितोध्दार के लिए प्रतिबध्द है। आंबेडकरजी ने कहा था कि अपने बच्चों को शिक्षित करो ताकि उनके लक्ष्य महान हो, उनके जनमानस से हीन ग्रंथी दूर हो जाएगी। उन्होंने कहा है कि जीवन में साक्षरता का अर्थ है-पीडितों तथा शोषितो को इज्जत के स्तर पर उठाना। इसी से प्रेरित होकर आज का दलित साहित्यकार गर्व अनुभव करता है- अपनी दलित अस्मिमा पर। उन्होनें कहा कि दलित स्वयं सामाजिक अन्याय के विरूध्द अहिंसात्मक संघर्ष करे।

डॉ. बाबसाहेब आंबेडकर की शिक्षाओं और सिध्दांतो के आलोक में जब हम रत्नकुमार सांभरिया की 'हुकम की दुग्गी'कहानी संग्रह की 'फुलवा' 'काल तथा अन्य कहानियाँ' कहानिसंग्रह मे, की 'डंक' कहानी 'इत्तफाक','संवाखे' आदि कहानियों का विश्लेषण करते है, तो पाते है कि इनकी अधिकतर कहानियाँ आंबेडकरजी के जीवन-दर्शन से प्रभावित है। आंबेडकर स्वयं उच्च शिक्षा प्राप्त व्यक्ति थे। साँभरियाजी ने भी स्नातकोत्तर तक की पढाई की है। यही शैक्षिक दर्शन इनकी कहानियों में भी झलकता है।

Scholarly Research Journal's is licensed Based on a work at www.srjis.com

प्रस्तावना :-

हिन्दी साहित्य के प्रमुख हस्ताक्षर सुपरिचित कथाकार रत्नकुमार सांभारिया ने अपने लेखन व्दारा दलित चेतना और अस्तित्ववादी साहित्य से हिन्दी साहित्य को दिशा दी है। उनके जीवन का रास्ता दलित, पीडित, शोषित बस्ती से निकलकर सवर्ण के अन्याय अत्याचारों की कंटिली पगडंडियों से होता हुआ समाज की मुख्यधारा तक रहा है। सांभरिया के साहित्य में जीवन संघर्ष और इमानदारी अभिव्यक्ति के फलस्वरूप उनकी कहानियों के पात्र न हताश होते है, न निराश होते है, न थकते है, और न हारते है। विषम परिस्थितियों का कदम-दर-कदम मुकाबला करते मान-सम्मान, स्वाभिमान और मर्यादा का जीवन जीते है। इसलिए आज के वर्तमान युग में सांभरिया का साहित्य दलित समाज को नई दिशा देता है।

ध्येय/उहिष्टये:

१ रत्नकुमार सांभरिया का व्यक्तित्व एवं कृतित्व।

२.रत्नकुमार सांभरिया का हिन्दी साहित्य में योगदान

३.रत्नकुमार सांभरिया की कहानियों में कथ्यगत विशेषताओं का अध्ययन।

४.सांभरियों में शिल्पगत अध्ययन।

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

५. सांभरिया की कहानियों में व्यक्त विविध आयाम ।

गृहितके:-

१. रत्नकुमार सांभरिया की कहानियों में कथ्थगत शिल्पगत अध्ययन।

२. सांभरिया की कहानियों में ग्राम्यजीवन का विविध परिदृष्य, ग्रामीण परिवेश, प्रकृति-चित्रण बेरोजगारी का अध्ययन करना।

३. रत्नकुमार सांभरिया के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का अध्ययन।

संशोधन क्षेत्र :-

१.विभित्र ग्रंथालयों की भेट।

२.पत्र-पत्रिकाओं काअध्ययन।

३.दलित अधिकार - पाक्षिक, बडौदा।

४.दैनिक वर्तमान पत्र।

५.हुकम की दुग्गी (कहानी संग्रह)

६. काल तथा अन्य कहानियाँ

७.दलित समाज की कहानियाँ (कहानी संग्रह)

८.खेत तथा अन्य कहानियाँ (कहानी संग्रह)

९. समकालीन भारतीय साहित्य -मई,जून-२००६

अभ्यास पध्दती :-

सर्वेक्षण पध्दती में घटना का विवरण तथा विश्लेषण किया जाता है। सामान्य सर्वेक्षण किसी घटना एवं विभिन्न चरों के संदर्भ में उनकी वर्तमान स्थिति का सुचक है। यह वर्तमान में होनेवाली शोध सम्बन्धी घटनाओं एवं परिस्थिति से सम्बंधित है। इसका संबंध वर्तमान समय में घटित होनेवाली घटनाओं से रहता है ।

विषय विवेचन

डॉ. भीमराव आंबेडकर एक व्यक्ति नहीं बल्की महामानव थे । इसलिए भारत सरकारने उन्हें भारतरत्न की सर्वोच्च उपाधि से अलंकृत किया था । उन्हें भारतीय संविधान के अमर शिल्पी, सामाजिक क्रांती के सूर्य, राष्ट्रवादी देशभक्त, ममत्व के प्रतीक, विशिष्ट मानवतावादी, शोषणमुक्त समाज के स्वप्नदृष्टा, भारतीय जनचेतना के प्रतीक, एवं दलित क्रांति के प्रणेता, दलितों -शोषितो के मसीहा तथा आधुनिक भारत कें निर्माता बोधिसत्व के रूप में जाना जाता है। इस महामानव की विचारधारा गौतम बुध्द, कांतिवीर कवि कबीर, रैदास एवं सामाजिक समता के सूर्य महात्मा ज्योतिबा फुले से अनूप्रेरित होकर अजस्त्र धारा के रूप में आज भी प्रवाहमान है और प्रासंगिक है। इन्होंने शिक्षित बनो, संगठित रहो और संघर्ष करो का प्रेरक मूल मंत्र देते हुए कहा था, मैंने तुम्हारे लिए जो कुछ भी किया है, वह बहेद मूसीबतों, अत्यंत दु:खों और बेसुमार विरोधियों का मुकाबला करके लिया है। यह कारवाँ आज जिस जगह पर मैं इसे बडी मुसीबतों के साथ लाया हूँ। तुम्हारा कर्तव्य है यह करावाँ हमेशा आगे

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

बढाते रहो, चाहे लाख्र रुकावटे क्यों न आएँ। यदि मेरे अनुयायी इसी परिस्थिति में इसे पीछे जाने न दे। आपको मेरा यही सन्देश है। इस कारवाँ की संघर्ष - यात्रा शान्ति से चलती रहनी चाहिए, भले ही अनेकानेक रुकावटे क्यों न आएँ।

इसी विचार दृष्टी की सार्थक परिणती दलित साहित्य का निर्माण है जो दलित कलम के रुप मे दलित चेतना एवं दलितोध्दार के लिए प्रतिबध्द है। डॉ. आंबेडकर ने काहा था कि अपने बच्चों को शिक्षीत करों, ताकि उनेक लक्ष्य महान हों। उनके जनमानस से हीन विचार दूर हो । यदि तुम इस तथ्य का पालन कर लो, तो अपने लिए स्वयं सम्मान और यश अर्जित कर सकते हो । ज्ञान प्रप्ती प्रत्येक मनुष्य का जन्मसिध्द अधिकारा है। यदि समाज के किसी भाग में परिर्वतन होता है, तो उसका प्रभाव अन्य भागों में पड सकता है, इसके लिए संगठित होना चाहिए। समाज के सभी सदस्यों को स्वतंत्र रूपसे मिलने जूलने का अवसर होना चाहिए। अत: उनमे एक निश्चित संगठन का होना आवश्यक है।

उन्होने कहा है कि जीवन मे साक्षारता का अर्थ है-पीडीतों तथा शोषितों को इज्जत के स्तर पर उठाना। मेरी जो भी उपलब्धि है, वह मेरे समुदाय के कारण मुझे गर्व हैं कि मैने दलित समाज ते जन्म लिया है। इसी से प्रेरित होकर आज का दलित साहीत्यकार गर्व का अनुभव करता है- अपनी दलित अस्मिता पर । उनका कहना था कि दलितों की उन्नति में बाधक किसी भी व्यक्ति, संस्था या संगठन का चाहे वह दलित समाज हि क्यों न हो। तीव्र विरोध करना चाहिए। दलितों को स्वयं अपने पैरों पर खडा होना चाहिए। जाति विहीन समाज की स्थपना के बिना स्वराज्य की प्राप्ति का होई महत्व नहीं है। जाति भावना से आर्थिक विकास रुकता है। जात-पाँत का रहते हुए ग्रामीण विकास समाजवादी सिध्दांतों के विरूध्द होंगा । मैं सच्चा धर्म चाहता हूँ लेकिन धर्म के नाम पर किसी प्रकार का ढोंग नहीं चाहता। धर्म में करूणा तथा प्रेम तथा मातृत्व होना चाहिए। उन्होंने कहा कि दलित स्वयं सामाजिक अन्याय के विरूध्द अहिंसात्मक संघर्ष करें।

अस्पृश्यता सेवावृती का दूसरा नाम है। कोई जाति अपना स्वाभिमान खोकर उन्नती नही कर सकती। दलितों की उन्नती अस्पृश्यता से मुक्ती उच्च शिक्षा, उँची नौकरियाँ और आजीविका के स्वच्छ एवं अच्छे साधनोंसे ही हो सकती है।

डॉ. भीमराव आंबेडकर की शिक्षाओं और सिध्दांतों के आलोक में जब हम रत्नकुमार साँभारिया की कहानियों का विश्लेषण करते है, तो पाते है कि इनकी अधिकतर कहनियाँ आंबेडकरजी के जीवन - दर्शन से प्रभावित है। डॉ. आंबेडकर स्वयं उच्च शिक्षा, प्राप्त मनुष्य थे। साँभारियाजीने भी स्नातकोंत्तर तक की पढाई की है। इनके संतान भी उच्च शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं । यही शैक्षिक दर्शन उनकी कहानियों में भी दिखाई पडता है।

'हुकम की दुग्गी' कहानी संग्रह की पहली कहानी 'फुलवा' में कहानीकार ने इस बात को रेखांकित किया है कि गॉव का जमीदार रामेश्वर जो अधिक सबल बन जाता है। इसकी तूलना में गाँव में उसकी हवेली में काम करनेवाली फुलवा जो एक दलित महिला है, अपने बेटे को पढाकर आई .पी.एस. की परीक्षा देने के लिए कहती है और वह एस.पी. तक बन जाता है। रामेश्वर अपने बेटे की नौकरी के लिए शहर आता है। वह मिलना तो पंडित माताप्रसाद से चाहता था, लेकिन तकदीर उसे फुलवा के यहाँ ले आती है। फुलवा रामेश्वर से कहती है, "मैंने भैया (बेटा) को फोन कर दिया है। वे आते ही होंगे । उनसे मिल लेना। वे बडे अफसर हैं। कोई काम हो तो बेझिझक बता देना"।१

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

इतना ही नही, अनपढ फुलवा अपने पढे-लिखे बेटे के लिए शिक्षित मेम साहेब लाती है। फुलवा अपनी बहू को बुलाती है। जब बहु आती है, तो उसे नमस्कार करती है और चली जाती है। रामेश्वर दॉत घिसने लगा था है। वह तो यह सोचकर बैठा था कि फुलवा की बहू गज भर घूँघट में आकर उसके पैर छुएगी। रामेश्वर मन-ही-मन कहता है 'आई है, जैसे गाँव की छोरी हो। न आदर न मान। अगर ऐसी बेहुदगी गाँव में की होती, तो उसका झोटा पकडकर खीचता और'...।२

इस कहानी में कहानीकार पूर्ण रूप से डॉ. आंबेडकर के सिध्दांतों का पालन करता दिखाई देता है। दलित फुलवा जमीदार रामेश्वर के समक्ष समता और बराबरी का व्यवहार करती है। बेटा राधामोहन और बहू संती -दोनों उच्च शिक्षित हैं।

कहानी के अंत में पंडित माताप्रसाद रामेश्वर को डाँटते हुए निम्नवत शब्द दलित समाज में आए परिवर्तन को रेखांकित करते हैं।

"तू तो कुएँ का मेढक ही रहा रामेसरिया। अब तो पद और पैसे का जमाना है, जात पाँत का नहीं। फुलवंती का राधामोहन कोई छोटा -मोटा अफसर नहीं है - एस.पी. है। रामेसरिया एक बात बताऊ तू जाकर मेंम साहेब के पाँव पकड ले और तब मत छोडो जब तक वह हाँ न कह दे"। ३

"काल तथा अन्य कहानियाँ" की कहानी 'डंक' जातिगत एकता का सर्वश्रेष्ठ उदाहरण है। डॉ. आबेडकर के 'संगठीत बनो, संघर्ष करो, का नारा कहानीकार ने इस कहानी में चरितार्थ किया है। गाँव का पुजारी सतना गाँव के एक दलित खेरा से अपनी बेटी की शादी के लिए बीस हजार रूपये उधार लेता है। रूपये न चूकाने की कुटिलता पुजारी के दिमाग मे उपजती है। एक दिन खेरा निपटने के लिए खेत में बैठा था कि सतना पुजारी के लठैतों ने पीछे से वार करके उसकी कमर तोड दी । वह हमेशा के लिए अपंग हो गया । उसके दवा दारू मे उसकी बकरियाँ, भेडे सब कूछ बिक जाती हैं। जब खेरा की पत्नी मांगी सतना पुजारी से उधार दिए रूपये माँगने जाती है, तो सतना कहता है, 'राह देख अपनी'। ४

मांगी का ध्यान जूती की ओर गया । उसके दिलने चाहा कि उसे जूती से जुतिया दूँ। जब मांगी क्रोधित हो पुजारी से बीस हजार रूपये देने को कहती है, तो क्रोध और व्देष से पूजारी सतना की नसे खडी हो जाती है। नथुने फडफडाने लगते हैं। आँखे लाल हो जाती है। वह ढिठाई से, कहता है, "दो धेले का डेढ हुक्का पीकर आसमान छेदता था । पतला फाडता था। कंधे पर लटठ धरे रास्ता रोककर खडा हो जाता था मेरा ! जा, उसी नीच को भेज दै"।

मांगी ने गुस्से मे घुँघट तिरछा किया, "खूब हो तूम भी ! उनके पाँव है, जो चले आएँगे।" ५

'तु तो दौडी -दौडी चली आती है न उस दिन खेरा की कमर तोड दी थी, एक दिन तेरी भी कमर तोड दूँगा'।

मांगी को काटो, तो खून नही। गुस्से से फनफनाती मांगी ने पैर से जूती निकाल ली थी । वह सतना से कहती है "जा निकालकर ला लाठी। मैं देखती हूँ तुझे। मरद होते, तो सामने से वार करते मेरे आदमी पर।" ६

जब मांगी ने घर आकर खेरा को सारी बात बताई, तो खेरा का खून खौलने लगा, लकिन वह असाहाय और निरुपाय था। प्रतिहिंसा के भाव से कोने में रखी ताँबे से गुँथी लाठी की ओर देखता और विवशता से दाँत से हाथ काट लेता था। घायल

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

सिंह शत्रु को सामने न पाकर खूद के नोंचने लगता है। खेरा ने खुद लहूलुहान कर लिया था। मांगी उसे शांत करने की चेष्ठा करती रही। खेरा का उबाल नही थमा। उद्वेलित होते-होते उसे बेहोशी का दौरा पड गया था। उसी बेहोशी नही टूटी। हाँ, रात नौ बजे खेरा नही रहता।

सतना को कोसती मांगी का रुदन सुन खेरा की जात-बिरादरी के साथ समस्त गाँव गोलबंद हो गया था सतना के विरुध्द।

"गाँव में खौलते लावा-सा उबाल था।" खेरा आई मौत नहीं मरा। सतना ने बेचारे को जान- बूझकर मार डाला, उधारी नही देनी पडे। सतना जैसे शैतान का गाँव में क्या काम ? गाँव ने सतना के घर को घेर लिया था। गाँव वालों के हाथो में लाठियाँ थी। गाँव वालो के हाथ में जेलियाँ थी। गाँव के हाथ में पत्थर थे"। ७

बिल में घुसे साँप सा सतना अपने घरमें चुपकर बैठा था।

'इत्तफाक' कहानी की नायिका बुढिया को ब्याह के कुछ दिन बाद ही उसका पति इसलिए मार-पीटकर घर से निकाल देता है कि उसका रंग काला था। वह दूसरा घर कर लेती है। कहानीकार वर्षो बाद बुढे और बुढियाको इत्तेफाक से मिला देता है। अनपढ बुढिया बेटे को पढाती- लिखाती है और वह कलेक्ट्रेट में बडा बाबू की नौकरी करने लगता है। कुछ वर्षों बाद बाबूगिरी छोडकर ठेकेदारी पकड लेता है। लक्ष्मी उमड पडती है। बुढिया अपने बेटे खेतसिंह के लिए बहू भी पढी-लिखी लाती है, जिसका नाम श्यामा है।

"वह चालीस साल की साँवले रंग की मजबूत कद काठीवाली औरत थी एम.ए.बी.एड. और लडकियों के स्कूल मे टिचर"। ८

रत्नकुमार साँभरिया की कहानी 'संवाखे' का जमन वर्मा एक दलित पात्र है। साथ ही वह शिक्षित एवं नेत्रहीन है। एक स्कूल में शिक्षक के पद पर कार्यरत है। एक अन्य पात्र नेत्रहीन विभा शर्मा घर वालों द्वारा सताए जाने पर घर से भाग जाती है और बदमाशों के हाथ पड जाती है। जमन वर्मा तीन गुंडो से उसे बचाता है। दोनों कुछ दिनों तक एक ही घर में रहते है।

इसी बीच विभा शर्मा जमन वर्मा को चाहने लगती है और दोनों विद्यालय के प्राचार्य श्यामाजी के सहयोग से शादी कर लेते है।

विभा शर्मा के घरवाले उसे ढूँढते हुए आते है और विभा को उठा ले जाते हैं। श्यामाजी की साँठ-गाँठ से सारी कार्यवाही होती है। श्यामाजी जमन वर्मा को नौकरी से भी हटा देते है, क्योंकि विभा वर्मा के घरवाले श्यामाजी के निकट के जान पहचान वाले निकले थे।

"रिक्शे पर बैठे जमन को श्यामाजी का आचरण सुई-सा चुभ रहा था। वे ऐसा बेहुदा सलूक करेंगे, उसके गुमान में भी नहीं था। जात का जिन्न मनुष्यता को निगल गया"। ९

जमन वर्मा जब अपनी शिकायत लेकर विलकांगो के देवता आका के पास जाता है, तो वह श्यामाजी के खिलाफ कोई भी बात सुनने को तैयार नहीं होते। वह वहाँ से निराश हो रिक्शे पर बैठकर बोझिल मन से लौट रहा था। जब वह रेल की पटरी

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

के सहारे उस स्थान से गुजर रहा था कि उसके अंतस में पाँच महिने पहले का हादसा याद आ गया। एक गडढे से आती जवान नारी मदत माँगती हुई उसकी आवाज उसके कानों मे गूंजने लगी थी। "अरे नीच, मै अंधी हूँ। बेसहारा हूँ। घर-परिवार नाही है मेरा धर्म देख! दया कर! रहम खा" तू छोड मुझे। दूर हट, अरे बचाओ, बचाओ मुझे। १०

"उल्लू की पट्ठी चूप रहो" आतताई की आवाज आई। जमन ने आव देखा न ताव, उल्लू की पट्ठी चुप, कर स्वर जिर से आया था, उस स्वर पर साधा पत्थर अर्जून का बाण सिध्द हुआ था। पत्थर उस गूंडे के सिर पर जा गिरा था। खून का फव्वारा फूट पडा था।

"अरे मार दिया, अरे मार दिया कहता हुआ उपद्रवी विभा को छोड वहाँ से भाग गया था"। ११

जब जमन को आका के यहाँ न्याय नही मिला, तो वह विकलांगो की संस्था के अध्यक्ष देवतसिंह के पास गया। देवतसिंह जमन के आश्वस्त करते हुए कहते है, "मै संघ को शक्ति मानता हूँ। आका खुद विभा को लेकर नहीं आए तो मेरा नाम देवतसिंह नहीं ।"१२

देवतसिंह जमन को लेकर एफ.आई. आर लिखवाते है, लेकिन उस पर कार्यवाही न होती देख उसने एक पत्र के संवाददाता सी.सी.झा की शरण ली। संवाद दाता ने सारा वाकया सुनकर कहा, "कल ही अखबार में छाप दूँगा"।

लेकिन जब दूसरे दिन अखबार निकला, तो उसके नौवें पृष्ठ पर खबर थी- "नेत्रहीन ने जात छुपाकर विवाह रचा, पत्नी मैके गई"। अखबारवाला भी श्यामाजी से रिश्वत लेकर बिक गया।

देवतसिंह ने जमन वर्मा को आश्वस्त करते हुए कहा, "जमन, हम विकलांग है। हमारी एक जात है। एक गोत्र है। न कोई लोभ हमे तोड सकता है और न लालच टस-से मस कर सकता है। हिम्मत रखो। विभा आएगी। पाताल से भी आएगी। अभी थाने चलते हैं। रिपोर्ट पर कार्यवाही कराने हेतू दबाव बनाएँगे।" १३

थानेदार विगलांगो का ही इंतजार कर रहे थे । सामने पडते ही उन्होने जमन को दूरदुराया, "अरे सुरदास का पूत! तू ही है क्या जमन वर्मा ?" थानेदार ने आँखे तरेरी, "रस्साले अंधे, लँगडे, लूले भी लडकियों को धोखा देकर शादी रचाने लगे हैं, मजनू कहीं का।" १४

थानेदार भी बिक चुका था । थानेदार की डाँट सुनकर जमन वर्मा बेहोश हो जाता है । जब उसे होश आता है, तो आसमान विकलांगो के नारों से गूँज उठता है । नारे आकाजी और श्यामाजी के विरोध में गूंज रहे थे । देवतसिंह जमन को बाताता है, "जमन, हम दो सौ के लगभग विकलांग आका के दफ्तर के सामने धरने पर बैठे हैं कल से । अखबारों की खबरों मे तुम आमरण अनशन पर हो । तुम्हारे स्कुल के अध्यापक और बच्चे भी आ गए है आज से । हर श्रेणी के विकलांग शरीक है हमारी मुहिम में ।"

जमन आज विकलांगो की एकता देखकर खुशीसे फूल गया था । अगर अपनी पर आए, तो विकलांग लोहे की गेंद है, जिसे न किक मारी जा सकती है, और न उछाला जा सकता है । देवतसिंह आगे बताता है, "सुनो, हमने कल से आका को

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

कार्यालय में घुसने नही दिया है, आका अंदर जाने के लिए गिडगिडाते रहे । चिरौरी करते रहे ।आश्वासन देते रहे । चश्मा गिर गया था। थानेदार समेत पुलिस बल मौजूद था, ना आका कुछ कर पाए और न पुलिस कुछ कर पाई। हम पहाड-से अडे है। हमारी एक ही माँग है- विभा।१५

उसने जमन के हाथ में पेन पकडाकर कागज पर टिकाया और कहा, जमन, विकलांगो ने चंदा उगाह लिया है। कोर्ट में जाने के लिए कागज तैयार कर लिए हे हमने। तुम दस्तखत कर दो, ताकि केस दायर हो जाए।१६

जमन ने हस्तखत करके हाथ उठाकर नार लगाया, विकलांगो के आका...

आवाजें गूँजी, मुर्दाबाद मुर्दाबाद

श्यामाजी..... !

मुर्दाबाद मुर्दाबाद

निष्कर्ष:-

समाज में हो रही उथल-पुथल तथा परिवर्तनों को साहित्य अपने भीतर इस तरह से प्रस्तुत करता है कि संवेदित व्यक्ति उससे प्रभावित हूऐ बिना नही रह सकता। कहानी के माध्यम से लेखक अपने यथार्थ जगत में अनुभवों को इस तरह से परिलक्षित करता है कि समाज की समग्र पीडा और समस्याएँ उभरकर सामने आ जाती है । जो लेखक संवेदनशील होता है, वह समाज के इर्द गिर्द चलता है। इस प्रकार सांभरिया की कहानी साहित्य का अध्ययन करने से गाँव की दुनियाँ स्वतंत्रता के पश्चात एवं पूर्व में गाँव की दयनीय स्थिति के चित्रण से हिन्दी पाठकों एवं अध्ययनकर्ताओं को उसका अवश्यक लाभ होगा।

संदर्भ ग्रंथ :

रत्नकुमार सॉभरिया, -हुकम की दुग्गी, फुलवा-पृष्ठ ७
रत्नकुमार सॉभरिया, -हुकम की दुग्गी, फुलवा-पृष्ठ ७
रत्नकुमार सॉभरिया, -हुकम की दुग्गी, फुलवा-पृष्ठ १०
रत्नकुमार साँभरिया, -काल, तथा अन्य कहानियाँ, डंक- पृष्ठ ११७
रत्नकुमार साँभरिया, -काल, तथा अन्य कहानियाँ, डंक- पृष्ठ ११८
रत्नकुमार साँभरिया, -काल, तथा अन्य कहानियाँ, डंक- पृष्ठ ११८
रत्नकुमार साँभरिया, -काल, तथा अन्य कहानियाँ, डंक- पृष्ठ ११९
रत्नकुमार सॉभरिया, -हुकम की दुग्गी, इत्तफाक-पृष्ठ ९२
रत्नकुमार साँभरिया, समकालीन भारतीय साहित्य- मई, जुन २००६ सँवाखे- पृष्ठ १५८
रत्नकुमार साँभरिया, समकालीन भारतीय साहित्य- मई, जुन २००६ सँवाखे- पृष्ठ १६०
रत्नकुमार साँभरिया, समकालीन भारतीय साहित्य- मई, जुन २००६ सँवाखे- पृष्ठ १६१
रत्नकुमार साँभरिया, समकालीन भारतीय साहित्य- मई, जुन २००६ सँवाखे- पृष्ठ १६६
रत्नकुमार साँभरिया, समकालीन भारतीय साहित्य- मई, जुन २००६ सँवाखे- पृष्ठ १७०
रत्नकुमार साँभरिया, समकालीन भारतीय साहित्य- मई, जुन २००६ सँवाखे- पृष्ठ १७०
रत्नकुमार साँभरिया, समकालीन भारतीय साहित्य- मई, जुन २००६ सँवाखे- पृष्ठ १७१
रत्नकुमार साँभरिया, समकालीन भारतीय साहित्य- मई, जुन २००६ सँवाखे- पृष्ठ १७१

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies